(Q5) मेघदूत की काव्य कला का समीक्षात्मक विवेचन करें।

कालिदास की रचनाओं में 'मेघदूत' को अत्यन्त ममतापूर्ण महत्त्व प्राप्त है। संस्कृत के गीतिकाव्यों में इस प्रसादमधुरा शृंगारसंगोज्ज्वला रमणीय कृति को जो सम्मान मिला है, वह अन्य किसी काव्य को उपलब्ध नहीं होबा सका। पंडितों ने इसे खण्ड काव्य की आख्या प्रदान की है, लेकिन कथा-सूत्र इसमें अत्यन्त क्षीण किंवा नगण्य है। वास्तव में, यह प्रेम से आर्द्र एवं कातर हृदय की मधुर उद्वेजनाओं का मन्द्र-मनोरम कोश है। एक सौ बीस ललित पद्यों में महाकवि ने कान्ता-विश्लेषित यक्ष की वियोग-व्यथा का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। कथा यों है— 'अलकापुरी के अधीश्वर कुबेर ने अपने सेवक यक्ष को, कर्तव्य-च्युति के कारण, एक वर्ष के लिए निर्वासित कर दिया है। निर्वासन की अवधि, यक्ष भारत के दक्षिणांचल में अवस्थित रामगिरि नामक पर्वत पर व्यतीत करता है। आठ मास व्यतीत कर चुकने के बाद, वर्षा ऋतु के आगमन से उसके प्रेम-कातर हृदय में अपनी प्राण-दयिता यक्षिणी की स्मृतियाँ सहसा उद्वेलित हो जाती हैं और वह मेघ को दूत बनाकर उसके पास अपना प्रणय-संदेश प्रेषित करता है।' प्रस्तुत काव्य के पूर्वार्द्ध में यक्ष ने रामगिरि से अलका तक के मार्ग का विशद वर्णन किया है तथा उत्तरार्द्ध में अपनी प्रेयसी की विरह-विह्वल दशा का वर्णन कर, अन्ततः अपना मर्म-विदारक संदेश भेजा है। इतने ही से स्वल्प वृत्त को लेकर, कवि ने अपनी प्रसन्न मधुरा वाणी को 'मन्दाक्रान्ता की झूमती चाल' प्रदान कर वह अलौकिक रसधारा बहाई है जिसमें काव्य-रसिक अद्यावधि डूबते-उतराते चले आ रहे हैं।

'मेघदूत' में महाकवि कालिदास ने लौकिक प्रेम को अलौकिक रूप दिया है। . . . 'मेघदूत' में रसानुकूल शब्दों का प्रयोग तो किया ही है, साथ ही भाषा में ध्वन्यात्मक सौन्दर्य का समुचित समावेश भी किया है, जड़ प्रकृति की जंगम प्रकृति के साथ तुलना कर महाकवि ने उसे सजीवता और चित्रमयता प्रदान की है। इस दृष्टि से 'मेघदूत' की कवित्वमयी भाषा में एक सौम्य सांकेतिकता है। यही कारण है कि मेघदूत की कविताएँ महाकवि के भावुक हृदय की मर्मस्पर्शी वेदना का मधुरतम गान प्रतीत होती हैं। मेघदूत की उपर्युक्त विशेषताएँ — — — कालिदास को छायावादी कवियों की कोटि में सर्वोच्च स्थान प्रदान करती हैं।

मेघदूत की कविताएँ ध्वनिमयी शैली में लिखी गई छायावादी कविताएं हैं, जिनमें ध्वनिवक्रता के साथ छायावक्रता का अनुपम संयोग है। महाकवि कालिदास का मेघदूत-काव्य अभिव्यञ्जनावाद और छायावाद का चिरपुरातन और चिर-नवीन, अतएव सर्वोत्तम, प्रतीक है और विश्व के समस्त प्राचीन और अर्वाचीन साहित्य के लिए गौरव की वस्तु है।

मेघदूत में प्रकृति उद्दीपन के रूप में चित्रित हुई है और आलम्बन के रूप में भी। मेघदूत की रचना के पीछे एक विराट प्राकृतिक पृष्ठाधार है; मेघदूत की काव्य-कला का मेरुदण्ड प्रकृति है। इसमें अनगिनत सरस और मनोरम प्रकृति-चित्र हैं। प्रकृति के सुकुमार कवि कालिदास ने मेघदूत में, प्रकृति-सौन्दर्य में मानव की करुण अनुभूतियों के दर्शन किए हैं और साथ ही मानव की चिरसंचित वेदनाओं का प्रकृति की अनन्त छवि के बीच गुंफन किया है। अभिशप्त विरही यक्ष के सन्देशवाहक बादल में कवि ने विश्व की चिरन्तन व्यथा का अश्रुपूर्ण इतिहास रच दिया है।

'मेघदूत' का प्रथम प्रकृति-चित्र है आषाढ़ का प्रारंभ। ~~काले-कजरारे बादल~~ अब यक्ष को लगा कि बादल मिट्टी की ढूह से खेलता हुआ हाथी है। वर्षागमन से वियोगी यक्ष सहन शक्ति खो बैठता है। मेघ के आगे बड़ी मुश्किल से अपने को संयत कर वह सोचता है — वर्षा के प्रथम मेघ को देखकर प्रेममग्न दम्पत्तियों का भी हृदय-उत्कण्ठा से भर जाता है. तो दूरस्थ प्रिया की ग्रीवा के आलिंगन की अभिलाषावाले की मर्मव्यथा की क्या कथा?

तस्य स्थित्वा कथमपि कौतुका धानहेतो
रन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ।
मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्तिचेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे ॥

कालिदास ने जहाँ कहीं किसी भौगोलिक स्थान का वर्णन किया है, वहाँ प्रायः पूरी वास्तविकता का परिचय दिया है। सुमेरु, अलका, गन्धमादन, औषधिप्रस्थ अमरावती आदि अति प्राकृतिक स्थानों के वर्णन में भले ही उसने कल्पना विलास से काम लिया हो, लेकिन हिमालय, महेन्द्र, उत्कल, पाण्ड्य, केरल, सिन्धु, कम्बोज, कैलास आदि प्रान्तों के वर्णन में उसने भौगोलिक सत्यता का परिचय

दिया है।

'मेघदूत' विप्रलम्भ शृंगार का अपूर्व काव्य है। इसमें कवि यक्ष के माध्यम से जो सन्देश अलका की विरहिणी के पास भेजता है, लगता है वह प्राणों से प्राणों को भेजा जा रहा है।

मेघदूत का आरम्भ और अन्त विरह के आँसुओं से होता है। विरही जीवन का यह संताप हमें वहाँ पहुँचा देता है, जहाँ सौन्दर्य एवं शिव से युक्त होकर यह मेघदूत शाश्वत विरह का काव्य बन जाता है। वस्तुतः शृंगार की बरसाती नदियों से बहकर कालिदास का यह काव्य हमें व्यथा के प्रशांत महासागर में पहुँचा देता है।